INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

हिंदी निबंध की परम्परा और अज्ञेय

डॉ.डी.पी.साहू
सहायक प्राध्यापक, हिंदी
शासकीय नवीन महाविद्यालय, लखनपुर
जिला-सरगुजा (छ.ग.)
Email- sahudp.sahu@gmail.com

निबंध गद्य की एक सशक्त एवं रोचक साहित्यिक विधा है, जिसमें किसी विषय पर लेखक अपने विचार, भाव, अनुभव, चिंतन और दृष्टिकोण को तार्किक, कलात्मक, सुव्यवस्थित और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो निबंध वह रचना है जिसमें किसी एक विषय पर तर्क, विवेचना, विश्लेषण या भावात्मक अभिव्यक्ति है। इसमें लेखक की व्यक्तिगत सोच स्पष्ट रूप से झलकती है। निबंध में लेखक उस विषय को समझाता है, उस पर अपने विचार रखता है और पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार निबंध एक मुख्य विषय पर सरल व प्रवाहपूर्ण भाषा में लेखक की स्पष्ट विचारधारा और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है।

हिंदी में निबंध का विकास आधुनिक हिंदी साहित्य से जुड़ा हुआ है। हिंदी निबंध का प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतेंदु युग से माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने निबंध को सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और जनजागरण का माध्यम बनाया। उनके निबंधों में सरल भाषा, व्यावहारिक विषय और सुधारवादी दृष्टि दिखाई देती है। इसका दूसरा काल द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी निबंध को अनुशासन, तर्कशीलता और नैतिक गंभीरता प्रदान की। जिनका मुख्य उद्देश्य समाज और पाठक को शिक्षित करना था। तीसरा चरण शुक्ल युग में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी निबंध को आलोचनात्मक और विवेचनात्मक आधार प्रदान किया। उनके निबंधों में साहित्य, संस्कृति, इतिहास और जीवन-दर्शन का गहन विश्लेषण मिलता है। इस युग में निबंध बौद्धिक परिपक्वता की उच्च अवस्था तक पहुँचा।

आधुनिक काल में हिंदी निबंध को व्यक्तिगत अनुभूति, आधुनिक चेतना और स्वतंत्र चिंतन से जोड़ने का कार्य आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, नंददुलारे वाजपेयी आदि लेखकों ने किया। किन्तु अज्ञेय ने निबंध को विचारों की मुक्त यात्रा के रूप में स्थापित किया।

भारतेन्दु युग- हिंदी निबंध की परम्परा का वास्तविक आरंभ आधुनिक काल में हुआ, जिसे सामान्यतः भारतेन्दु युग कहा जाता है। इस युग में हिंदी गद्य ने एक नई चेतना और दिशा प्राप्त की। निबंध विधा का विकास इसी काल में प्रारंभ हुआ और यह सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक जागरण का सशक्त माध्यम बनी। इस युग के प्रमुख साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिंदी नवजागरण का जनक माना जाता है। इस काल की समय सीमा लगभग 1868–1900 ई. माना जाता है। यह काल भारत में सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का काल था। अंग्रेज़ी शासन का प्रभाव बढ़ रहा था। शिक्षा और प्रिंटिंग प्रेस का विकास हो रहा था। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठ रही थी। इस परिवेश ने निबंध को विचार अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बना दिया। इस युग के निबंधों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक चेतना और सुधारवाद था। समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज़ प्रथा, अन्धविश्वाश आदि को उजागर करना था। वास्तव में निबंध समाज सुधार का उपकरण बन गया। इसके आलावा भारतेन्दु युग के निबंधों में राष्ट्रीय चेतना का विकास, राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। निबंध अंग्रेज़ी शासन की आलोचना तथा राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बना। सरल, सहज और जनसामान्य की भाषा तथा व्यंग्यात्मकता इस युग के निबंधों की प्रमुख विशेषता थी। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट आदि हैं। भारतेन्दु युग हिंदी निबंध परम्परा का प्रारंभिक और आधारभूत चरण रहा है। इस युग में निबंध ने समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र और उनके समकालीनों लेखकों ने हिंदी निबंध को एक सशक्त विधा के रूप में स्थापित किया, जिस पर आगे के युगों में व्यापक विकास हुआ।

द्विवेदी युग- हिंदी निबंध की परम्परा का दूसरा अत्यंत महत्वपूर्ण चरण **द्विवेदी युग** है। इसका काल लगभग 1900-1920 ई. तक माना जाता है। इस युग में निबंध विधा को व्यवस्थित रूप, अनुशासन और बौद्धिक दिशा प्राप्त हुई। इस काल के प्रमुख व्यक्तित्व महावीर प्रसाद द्विवेदी थे, जिनके नेतृत्व में हिंदी गद्य और निबंध दोनों का परिष्कार हुआ। द्विवेदी युग भारतीय समाज में नवजागरण के बाद का काल था। शिक्षा का विस्तार हो रहा था। राष्ट्रीय आंदोलन गति पकड़ रहा था। समाज सुधार की चेतना विकसित हो रही थी। इस वातावरण में निबंध लेखन अधिक गंभीर, तार्किक और उद्देश्यपूर्ण बन गया। इस काल के निबंधों में विचारों की स्पष्टता, विषय की क्रमबद्ध प्रस्तुति, तार्किक संरचना स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भाषा-परिष्कार और शुद्धता, संस्कृतनिष्ठ और परिष्कृत भाषा, व्याकरणिक शुद्धता के कारण निबंध अधिक साहित्यिक बना। इस युग के निबंधों में नैतिकता और शिक्षा, तार्किकता और बौद्धिकता, सामाजिक और राष्ट्रीय

चेतना को स्थान दिया गया। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, माधव प्रसाद मिश्र, बालमुकुंद गुप्त आदि हैं। वास्तव में द्विवेदी युग हिंदी निबंध परम्परा का संरचनात्मक और अनुशासनात्मक काल है। इस युग में निबंध विधा को स्थिरता, स्पष्टता और बौद्धिक आधार मिला। महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में हिंदी निबंध ने एक मजबूत नींव प्राप्त की, जिस पर आगे चलकर शुक्ल युग और आधुनिक युग में इसका व्यापक विकास हुआ।

शुक्ल युग- हिंदी निबंध की परम्परा में शुक्ल युग एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक चरण माना जाता है। इसका काल लगभग 1920 -1940 ई. तक का समय है, जिसमें निबंध साहित्य ने अपनी परिपक्वता और बौद्धिक ऊँचाई प्राप्त की। इस युग के प्रमुख निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं, जिन्होंने हिंदी निबंध को गंभीर, विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया। शुक्ल युग का समय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के उभार का काल था। राष्ट्रीय चेतना प्रबल हो रही थी। शिक्षा और विचार-विमर्श का विस्तार हो रहा था। साहित्य में गंभीरता और बौद्धिकता का विकास हो रहा था। निबंध लेखन में एक नए वातावरण का विकास हुआ। निबंध केवल विचार-प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें गहन विश्लेषण, तर्कपूर्ण विवेचना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश हुआ। शुक्ल जी ने "साहित्य का उद्देश्य लोकमंगल है।" की बात कही। साहित्य में समाज के कल्याण की भावना और जनहित का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गंभीर और परिपक्व भाषा-शैली और विषय की विविधता के कारण इस युग के निबंध बहुआयामी हो गये। इस युग के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर आदि हैं। शुक्ल युग में निबंध को बौद्धिक ऊँचाई मिली , आलोचनात्मक निबंध का विकास हुआ, साहित्यिक इतिहास और समीक्षा को आधार मिला तथा निबंध एक गंभीर विधा के रूप में स्थापित हुआ। शुक्ल युग हिंदी निबंध परम्परा का परिपक्व और स्वर्णिम काल है। इस युग में निबंध ने गहनता, विश्लेषणात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त किया। रामचंद्र शुक्ल के योगदान से हिंदी निबंध एक उच्चकोटि की बौद्धिक विधा बन गया, जिसने आगे के आधुनिक निबंध लेखन की मजबूत आधारशिला तैयार की।

आधुनिक युग और अज्ञेय- हिंदी निबंध की परम्परा में आधुनिक युग एक अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी चरण है। इस युग में निबंध केवल सामाजिक या आलोचनात्मक विधा नहीं रहा, बल्कि यह व्यक्तित्व, आत्मचेतना और दार्शनिक चिंतन का माध्यम बन गया। इस परिवर्तन के केंद्र में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने हिंदी निबंध को नई दिशा, गहराई और प्रयोगधर्मिता प्रदान की। इस युग का समय लगभग 1940 ई. के बाद

आता है। इस युग में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव, पश्चिमी विचारधाराओं (अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण) का प्रभाव, और व्यक्ति की स्वतंत्रता और पहचान का प्रश्न दिखाई देता है। इन परिस्थितियों ने निबंध को अधिक व्यक्तिगत और चिंतनशील बना दिया।

अज्ञेय जी आधुनिक हिंदी निबंधकारों में अज्ञेय विशिष्ट स्थान रखते हैं। हिंदी निबंध को आत्मपरकता, अनुभूति और व्यक्ति-स्वातंत्र्य की अभिव्यक्ति का माध्यम से जोड़ने लिए अज्ञेय का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने निबंध को विचारों की मुक्त यात्रा के रूप में स्थापित किया, जहाँ निष्कर्ष से अधिक चिंतन-प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। अज्ञेय के निबंधों में आधुनिक मनुष्य की अस्मिता, स्वतंत्रता, सांस्कृतिक चेतना और सौंदर्यबोध का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। उनके निबंधों में साहित्य, कला, संस्कृति, दर्शन, राजनीति, मनोविज्ञान और व्यक्ति-स्वातंत्र्य जैसे विविध विषयों का समावेश है। अज्ञेय की निबंध-शैली आत्मपरक, चिंतनशील और काव्यात्मक है। प्रतीक, बिंब और संवादात्मकता उनकी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उनके निबंध पाठक को किसी निष्कर्ष तक पहुँचाने के बजाय सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। त्रिशंकु, आत्मनेपद, भवन्ती और अरे यायावर रहेगा याद आदि उनके प्रमुख निबंध-संग्रह हैं। इन निबंधों में आधुनिक मनुष्य की अस्मिता, स्वतंत्रता और अस्तित्व-बोध का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी निबंध की परंपरा सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक चिंतन से आगे बढ़ते हुए आधुनिक आत्मपरकता तक पहुँची है। अज्ञेय ने इस परंपरा को आधुनिक चेतना और व्यक्ति-स्वातंत्र्य से समृद्ध किया। उनके निबंध हिंदी निबंध साहित्य को न केवल नई दिशा देते हैं, बल्कि उसे वैश्विक आधुनिकता से भी जोड़ते हैं।

सूचक शब्द - हिंदी निबंध, निबंध परंपरा, अज्ञेय, आधुनिक चेतना, आत्मपरकता, व्यक्ति-स्वातंत्र्य, अस्मिता, दृष्टिकोण आदि।

संदर्भ सूची

अज्ञेय - त्रिशंकु, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

अज्ञेय - आत्मनेपद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

शुक्ल, रामचंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

द्विवेदी, हजारीप्रसाद - निबंध साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

वाजपेयी, नंददुलारे - हिंदी निबंध का विकास, साहित्य भवन, इलाहाबाद।

मिश्र, शिवकुमार - आधुनिक हिंदी निबंध, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

R E S E A R C H G A T E W A Y

A R O G Y A M O N L I N E

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM